# जवाबदेही – किसकी और क्यों?

उषा शर्मा*

**गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए यह ज़रूरी है कि शिक्षा से जुड़े व्यक्तियों की जवाबदेही सुनिश्चित की जाए और यह भी जवादेही को उसके सकारात्मक परिप्रेक्ष्य में समझा जाए। 'शिक्षा का अधिकार' के बाद इसकी आवश्यकता और भी 'गर्माने' तथा 'गहराने' लगी है। जवाबदेही के माध्यम से कार्य से जुड़े विभिन्न पक्षों की निष्पत्ति को देखने का प्रयास किया जाता है। यह भी कहा जा सकता है कि 'जवाबदेही अच्छा परिणाम प्राप्त करने का एक विशिष्ट प्रयास है।' प्रायः जवाबदेही के समर्थक यह मानते हैं कि शिक्षक की जवाबदेही निश्चित कर देने से शिक्षार्थी की निष्पत्ति के द्वारा शिक्षक के कार्य ओर प्रभाव का मूल्यांकन किया जा सकता है। शिक्षक जितना अधिक प्रभावशाली होगा, शिक्षार्थी उतना ही अधिक सीख सकेगा। परंतु यह अधिक तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता। एक बालक जब विद्यालय में प्रवेश लेता है तो अनेक प्रकार की छाप उस पर पहले से ही अंकित होती है। बालक की सोच, उसका व्यवहार अपने परिवार, समाज, वातावरण और अपनी बौद्धिक योग्यता से प्रभावित होता है। शिक्षार्थी की अभिवृत्ति, उसकी स्व-धारणा, मूल्यों के लिए किस प्रकार शिक्षक को पूर्ण रूप से जवाबदेह सिद्ध किया जा सकता है? जबकि ये विद्यालय के बाहर अन्य तत्त्वों से अधिक प्रभावित होते हैं। आइए, कुछ इन्हीं खास मुद्दों पर गहराई से विचार करें।**

'शिक्षा का अधिकार' के क्रियान्वयन के बाद अब शिक्षा से जुड़े सभी व्यक्तियों की जवाबदेही सुनिश्चित हो गई है। सवाल जब गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का हो तो यह मसला और भी गंभीर हो जाता है। शिक्षक, प्राचार्य, स्कूल मैनेजमेंट कमेटी के सदस्य, शिक्षा अधिकारी... और भी सभी व्यक्ति जो इस शिक्षा-व्यवस्था के हर पहलू से जुड़े हैं। फिर चाहे वे सरकारी विद्यालय हों या अर्ध-सरकारी या फिर तथाकथित पब्लिक स्कूल (जो वस्तुतः पब्लिक के लिए हैं ही नहीं)! यदि गहराई से विचार करें तो यह कहा जा सकता है कि वर्तमान संदर्भों में 'जवाबदेही' की संकल्पना एक आधारभूत आवश्यकता के रूप में उभरकर आई है। जवाबदेही एक बृहत् संकल्पना है। जवाबदेही

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली-110016

के माध्यम से कार्य से जुड़े विभिन्न पक्षों की उपलब्धि को देखने का प्रयास किया जाता है। इसमें पृष्ठपोषण या 'फ़ीडबैक' की प्रक्रिया भी शामिल रहती है। अन्य शब्दों में, जवाबदेही बेहतर परिणाम प्राप्त करने का एक विशिष्ट प्रयास है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक की जवाबदेही के लिए कौन-से मानक तय किए जाएँ? जवाबदेही सुनिश्चित करने से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सकता है। शर्त यह है कि जवाबदेही को उचित एवं सकारात्मक दृष्टि से लिया जाए। परंतु यह भी सत्य है कि जवाबदेही की सार्थकता तभी है जब उसके साथ अधिकार अथवा स्वायत्तता संबद्ध हो। शिक्षक अपना वृत्तिक कार्य करने हेतु शैक्षिक रूप से स्वतंत्र होना चाहिए।

समकालीन शैक्षिक गतिविधियों का एक प्रमुख महत्वपूर्ण आवश्यक बिंदु इस रूप में सामने आया है कि 'शिक्षा को एक उद्योग के रूप में स्थापित किया जा रहा है' अर्थात् शिक्षा एक नैतिक विषय की अपेक्षा केवल एक व्यावसायिक दृष्टिकोण से देखी जाने लगी है। शिक्षा की संस्कृति अब उद्योग की संस्कृति-सी बनती जा रही है। इस तरह उद्योगों के विभिन्न पक्ष स्वाभाविक दृष्टि से शिक्षा के साथ जुड़ जाते हैं। जिनमें से जवाबदेही अथवा उत्तरदायित्व एक प्रमुख बिंदु है। इस जवाबदेही का मूल तत्त्व यही है कि कर्मचारी अपने कार्य की कुशलता, परिणाम आदि के प्रति जवाबदेह हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986* ने स्पष्ट रूप से शिक्षकों को इस संदर्भ में लेते हुए माना है कि शिक्षकों को अपने कार्य के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। इस संदर्भ में विभिन्न प्रकार के विचार पक्ष तथा विपक्ष में प्राप्त होते हैं। उच्च शिक्षा के संदर्भ में इस विषय पर विपुल साहित्य उपलब्ध है जिसमें स्वायत्तता बनाम जवाबदेही के प्रश्न के माध्यम से इस विषय पर विचार किया गया है।

आइए, अब एक दृष्टि जवाबदेही की संकल्पना अथवा स्वरूप पर डालें। यूँ तो 'जवाबदेही' शब्द एक पुराना शब्द है। शब्दकोश के अनुसार इसका संबंध कार्य के लेखे-जोखे से है। यह अपने आप में एक प्रकार से आर्थिक शब्द है। स्पष्ट रूप से अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि जवाबदेही का संबंध इस बिंदु से है कि यदि हम किसी कार्य में निवेश करते हैं तो उसके बदले में अच्छा फल प्राप्त होना चाहिए। जवाबदेही का सीधा संबंध निष्पत्ति के मूल्यांकन से है, अदा (input) एवं प्रदा (output) की प्रक्रिया से है। वेबस्टर की *'थर्ड न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी'* के अनुसार जवाबदेही के दो मायने हैं –

- जवाबदेह बनने योग्य (capable of being accounted)
- विषय जिसके लिए जवाबदेह बनाया जाए (subject to giving an account)

कुछ विचारक जवाबदेही को अव्यावसायिक समस्याओं के विरुद्ध एक व्यावसायिक चेतना के रूप में स्वीकार करते हैं। कुछ विचारकों का यह मानना है कि जवाबदेही एक प्रकार की 'मौन प्रतिज्ञा' है, जो वास्तविक आवश्यकताओं के विरुद्ध झूठी आत्मतृप्ति देती है। दूसरी ओर कुछ विचारकों का मानना है कि जवाबदेही वह नया आविष्कार है जो अपने अस्पष्ट एवं धुँधले मंच पर सभी दावों को बड़ी कुशलता से मापकर बताती है तथा जनसमुदाय को आकर्षित किए रहती है। लेकिन स्वयं सब दायित्वों से मुक्त रहती है। विमला डोरथी के अनुसार 'जवाबदेही का साधारण और सर्वमान्य तात्पर्य यह लिया जाता है

कि सरकारी या गैर सरकारी, वे सभी कर्मचारी जो किसी कार्य के लिए नियुक्त किए जाते हैं, उस कार्य के उद्देश्य को पूरा करने के लिए पूरी तरह जवाबदेह हैं।' कार्य के अच्छे और बुरे दोनों पक्ष उसी के कार्य करने की शैली को प्रकट करते हैं। इसे अधिक सफलता से इस प्रकार समझा जा सकता है कि "पुलिस कर्मचारी पुलिस रहे, शिक्षक शिक्षक रहे, न्यायालय के न्यायाधिकारी न्याय करें, प्रशासनिक अधिकारी प्रशासन व्यवस्था करें।"

'जवाबदेही' की संकल्पना के संदर्भ में यह भी ध्यातव्य है कि 'जवाबदेही' एवं 'मूल्यांकन' परस्पर समानार्थक शब्द नहीं हैं। यद्यपि जवाबदेही स्पष्ट रूप से मूल्यांकन पर निर्भर करती है तथापि यह एक वृहत् संकल्पना है। जवाबदेही के माध्यम से कार्य से जुड़े विभिन्न पक्षों की निष्पत्ति को देखने का प्रयास किया जाता है। इसमें प्रतिपुष्टि अथवा पृष्ठपोषण की प्रक्रिया भी सम्मिलित रहती है। अत: यह स्पष्ट है कि 'जवाबदेही अच्छा परिणाम प्राप्त करने का एक विशिष्ट प्रयास है।'

शिक्षा के क्षेत्र में जवाबदेही अपेक्षाकृत एक नवीन संकल्पना है। यह युग जवाबदेही का युग है। इस जवाबदेही के युग में शिक्षा को एक जवाबदेही विषय के रूप में बहुत सरलता से स्वीकार नहीं किया गया। यह सब मानते हुए भी कि शिक्षा का स्तर निश्चित रूप से दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है, फिर भी इसका हार्दिक स्वागत नहीं हुआ। अगर स्वीकृति का प्रश्न उठता भी है तो इस रूप में कि अब कोई और अन्य उपाय नहीं। अंतत: उसके क्या कारण हैं? जवाबदेही शब्द एक प्रकार का नारा है, फैशन है जिसकी लहर में मूल सिद्धांतों के कार्यों की भी जवाबदेही निश्चित की जाए। शिक्षा-जगत में जवाबदेही की संकल्पना एवं आवश्यकता अनेक तत्त्वों अथवा कारकों के कारण उत्पन्न हुई है, यथा-यांत्रिकी के नवाचारों का प्रवेश, विशिष्ट योजनाएँ, शिक्षा का गिरता स्तर, शिक्षा में राजनीति का प्रवेश, जनसमुदाय का शिक्षकों के प्रति विश्वास का अभाव आदि।

*राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986* के भाग-9 (शिक्षक) में शिक्षक की जवाबदेही के प्रश्न को उठाते हुए कहा गया है कि 'जवाबदेही - मानक तय किए जाएँगे। अच्छे कार्य को प्रोत्साहित किया जाएगा और निष्क्रियता को निरुत्साहित।' इसी नीति के भाग-7 (शिक्षा - व्यवस्था को कारगर बनाना) में शिक्षा - तंत्र को सक्रिय बनाने की चर्चा की गई है। साथ ही 'अध्यापकों को अधिक सुविधाएँ और साथ ही उनकी अधिक जवाबदेही' की भी चर्चा की गई है।

*राष्ट्रीय शिक्षक आयोग-I (1983-85)* ने अध्याय-9 में (शिक्षक से समाज की अपेक्षाएँ) शिक्षकों से संबंधित समस्याओं को उठाया है। इसके अनुसार हमारे शिक्षकों का वर्तमान कार्य-निष्पादन-स्तर अपेक्षा से काफी नीचा है। शिक्षकों के शैक्षिक तथा अन्य कार्यों का कोई मूल्यांकन नहीं होता और शिक्षक वास्तव में किसी के प्रति भी उत्तरदायी नहीं होते। बेहतर वेतन एवं कार्य-परिस्थितियों के बावजूद शिक्षक ने अपना पारंपरिक सम्मान खो दिया है। राज्य में अधिकांश शिक्षक न तो विद्यार्थी के प्रति और न ही समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों के साथ न्याय करते हैं। *कार्रवाई योजना—1986* के अनुसार 'शिक्षक-मूल्यांकन के लिए एक व्यापक, खुली प्रतिभागी और आँकड़ा-आधारित पद्धति स्थापित

की जाएगी। जो थोड़े बहुत शिक्षक अपना निष्पादन नहीं दे सकते अथवा ध्यानपूर्वक काम नहीं करते उन्हें अलग कर दिया जाएगा और जहाँ आवश्यक होगा उन्हें समुचित दंड भी दिया जाएगा।'

इस पूरी चर्चा के बाद यह तसवीर साफ़ होती है कि शिक्षा के गिरते स्तर के लिए शिक्षक भी काफी हद तक उत्तरदायी हैं। उसे उसके उत्तरदायित्व के प्रति सजग करने हेतु उसकी जवाबदेही निश्चित करना अत्यंत आवश्यक है।

यह स्पष्ट है कि शिक्षक की जवाबदेही एक आवश्यकता के रूप में उभरकर आई है फिर भी शिक्षक की जवाबदेही को किसी परिभाषा में बाँधना अपेक्षाकृत मुश्किल काम है। कारण स्पष्ट है कि शिक्षा न केवल शिक्षार्थी के निरीक्षणीय बाह्य व्यवहार से संबंधित है अपितु वह अनिरीक्षणीय सौंदर्य-भावना, संवेगात्मक विकास एवं नैतिक विकास तथा व्यक्तित्व के अन्य पक्षों से भी संबंधित है। ये कुछ ऐसे पक्ष हैं जिनके मापन के स्थिर मानक मानदंडों का अपेक्षाकृत अभाव-सा प्रतीत होता है। इस स्थिति में शिक्षक की जवाबदेही की कसौटी क्या हो? क्या केवल अनुभवात्मक निरीक्षणीय व्यवहार, शिक्षार्थी के अंक अथवा व्यवहारकुशलता और संवेदनशीलता, चारित्रिक दृढ़ता? जवाबदेही के समर्थक भी एकमत नहीं हैं। वे विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए जवाबदेही को विभिन्न प्रकार से देखने का प्रयास करते हैं। अत: बिना सोचे-विचारे इसे शिक्षक पर नहीं थोपा जाना चाहिए।

प्राय: जवाबदेही के समर्थक यह मानते हैं कि शिक्षक की जवाबदेही निश्चित कर देने से शिक्षार्थी की निष्पत्ति के द्वारा शिक्षक के कार्य और प्रभाव का मूल्यांकन किया जा सकता है। शिक्षक जितना अधिक प्रभावशाली होगा, शिक्षार्थी उतना ही अधिक सीख सकेगा। परंतु यह अधिक तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता। एक बालक जब विद्यालय में प्रवेश लेता है तो अनेक प्रकार की छाप उस पर पहले से ही अंकित होती है। बालक की सोच, उसका व्यवहार अपने परिवार, समाज, वातावरण और अपनी बौद्धिक योग्यता से प्रभावित होता है। बालक मात्र 5-6 घंटे ही शिक्षक के संपर्क में रहता है। शेष समय वह अपने परिवार, समाज, समवयस्क समूह से जुड़े परिवेश के संपर्क में रहता है। इस परिवेश का प्रभाव उसके आचरण, व्यवहार में स्पष्टत: परिलक्षित होता है। अत: शिक्षक को उन व्यवहारों, परिस्थितियों, आचरण के लिए जवाबदेह किस प्रकार बनाया जा सकता है, जिस पर उसका पूर्ण रूप से कोई नियंत्रण नहीं है और न ही जो अधिगम के प्रेरकदायी हैं। शिक्षार्थी की अभिवृत्ति, उसकी स्व-धारणा, मूल्यों के लिए किस प्रकार शिक्षक को पूर्ण रूप से जवाबदेह सिद्ध किया जा सकता है? जबकि ये विद्यालय के बाहर अन्य तत्त्वों से अधिक प्रभावित होते हैं।

शिक्षक की जवाबदेही का प्रश्न उस वर्ग की सोच का परिणाम है जिनकी समझ, सोच परिणामोन्मुखी है। जो अपने बच्चों पर व्यय किए गए धन का प्रतिफल तुरंत चाहते हैं। वे व्यय की गई राशि के अंश-अंश का हिसाब जानना चाहते हैं। सामान्यत: यह धारणा व्याप्त है कि शिक्षा की गुणात्मकता का मूल्यांकन उसके सुपरिभाषित उद्देश्यों के संदर्भ में किया जा सकता है और यह भी कि यदि शिक्षार्थी सीखता नहीं है तो इसका प्रमुख कारण यह है कि शिक्षक ने पढ़ाया नहीं है। विशिष्ट व्यावहारिक उद्देश्यों की सूची के संदर्भ में

शिक्षण को परिभाषित करने की यह प्रवृत्ति बालक को मशीनी यांत्रिकता से आबद्ध कर देना चाहती है। जिसमें यदि एक सिरे से कुछ डाला जाए तो वह तुरंत दूसरे सिरे से प्रतिफल के रूप में बाहर निकल आए। यह संकुचित प्रवृत्ति उस तथ्य को भी नकारती है जिसके अनुसार समस्त प्रकार का अधिगम संभाव्य है तथा विद्यालय के आंतरिक एवं बाह्य परिवेश में विद्यमान कारकों से प्रभावित होता है। यह संकुचित प्रवृत्ति बालक की वैयक्तिक भिन्नता के सिद्धांत की भी अवहेलना करती है।

सामान्यत: शिक्षक को एक चमत्कारी व्यक्ति के रूप में लिया जाता है जो अपनी सीमित भूमिका, अपर्याप्त संसाधन, समाज में सहयोगी के रूप में होने के उपरांत भी चमत्कारपूर्ण कार्य करने के योग्य है। बालक से लेकर राष्ट्र-निर्माण तक का समस्त उत्तरदायित्व केवल उसका है। उसे उन बातों के लिए भी जवाबदेह बनाया जाता है जिसके लिए समाज के अन्य व्यक्तियों को जवाबदेह बनाया जाना चाहिए। हम प्राय: यह भूल जाते हैं कि इस पूरे राष्ट्र में केवल शिक्षक ही शिक्षार्थी की नियति का नियामक नहीं है। उसे न तो समाज से अपेक्षित सहयोग ही मिल पाता है ओर न ही परिवार से। फिर बालक के सर्वांगीण विकास के लिए क्या केवल शिक्षक को ही जवाबदेह बनाया जाना चाहिए?

जवाबदेही का प्रश्न एक सीधा-सादा प्रश्न नहीं है। शिक्षक की जवाबदेही अपने से ऊपर के प्रशासकों की जवाबदेही से जुड़ी है। भला प्रशासकीय अदूरदर्शिता, राजनीतिक दाँव-पेंच, शिक्षा के प्रति गंभीर दृष्टिकोण का जवाबदेह अध्यापक कैसे हो सकता है?

प्राय: हम सभी इस तथ्य को भूल जाते हैं कि शिक्षक जिन विलक्षण स्थितियों में कार्य कर रहा है वहाँ संसाधन बहुत सीमित हैं, उसका कार्य-क्षेत्र बहुत छोटा है लेकिन उससे की जा रही अपेक्षाओं का स्वरूप असीमित है। वह भी एक सामान्य मानव है जिसकी अपनी कतिपय सीमाएँ हैं। विद्यालय के उस पाठ्यक्रम के लिए भी प्राय: शिक्षक को जवाबदेह घोषित किया जाता है, जिसके निर्धारण में उसकी कोई स्पष्ट, प्रत्यक्ष एवं सक्रिय भूमिका नहीं होती। यह पाठ्यक्रम भी सीमित कालांशों, सीमित अवधि के दायरे में आबद्ध है। शिक्षक के समक्ष यह प्रश्न उभरता है कि वह बोझिल पाठ्यक्रम को निर्धारित, सीमित समयावधि में पूर्ण करने को प्राथमिकता प्रदान करे अथवा बालक में मानवीय मूल्यों का विकास करने को प्राथमिकता दे, जो उसे एक सुसभ्य नागरिक, एक बेहतर मानव बनाने में योगदान देते हैं। इस संदर्भ में यह भी ध्यातव्य है कि जब कभी मूल्यों की चर्चा होती है तो विद्यालय और समाज, परिवार के मूल्य आपस में टकराते हैं। मूल्यों की यह द्वंद्वात्मक स्थिति शिक्षक के लिए जटिल समस्या बन जाती है। उसके समक्ष अनेक प्रश्न उठ खड़े हो जाते हैं कि वह किस पथ का अनुगमन करे। इस संदर्भ में मिलर का कथन उल्लेखनीय है कि 'यह अन्यायपूर्ण होगा कि किसी शिक्षक को उन लक्ष्यों के लिए जवाबदेह बनाया जाए जिन्हें निर्धारित करने में उनकी कोई भूमिका नहीं। जिसका चयन वह नहीं कर सकता, जिसकी कार्य-प्रणाली के लिए वह स्व-निर्णय नहीं ले सकता, उन संसाधनों को अपने स्तर पर प्राप्त नहीं कर सकता, जिसकी उसे आवश्यकता है।'

विद्यालयी परिस्थितियों में ऐसे अनेक उदाहरण प्राप्त हो जाते हैं जिनमें शिक्षक अनेक बार विरोध को सहन करता है। यह विरोध शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण, शिक्षण-पद्धति के संदर्भ में हो सकता है। विरोध प्रशासन, विद्यालय-प्रमुख, सहयोगी शिक्षक किसी के भी द्वारा हो सकता है। अत: इस विरोधात्मक परिस्थिति में क्या शिक्षक को जवाबदेह बनाया जा सकता है?

जवाबदेही को यदि सही एवं सकारात्मक दृष्टिकोण से लिया जाए जो निश्चित रूप से यह अधिक कारगर सिद्ध होगी। यदि हम यह मान लें कि शिक्षकों की जवाबदेही को निश्चित करने से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा ही तो प्रश्न उठता है कि शिक्षक को किसके लिए जवाबदेह बनाया जाए अथवा शिक्षक की जवाबदेही का संदर्भ क्या हो। केवल अंक परीक्षा परिणाम अथवा शिक्षा से संबद्ध समस्त पक्षों के प्रति उसकी संवेदनशीलता? शिक्षार्थी को केवल इस योग्य बना देना कि वह सरलतापूर्वक रोज़गार प्राप्त कर सके अथवा उसका समाजीकरण - जो समाज एवं राष्ट्र के लिए हितकर है? शिक्षार्थी का भौतिक, आर्थिक पक्ष अथवा उसका मानवीय मूल्यों से परिपूरित नैतिक पक्ष? हम क्या चाहते हैं? बालक का केवल ज्ञानात्मक विकास अथवा उसका सर्वांगीण विकास? हम बालक को विश्वकोश, कंप्यूटर बनाना चाहते हैं अथवा मानव? अंतत: प्रश्न उठता है कि शिक्षक की जवाबदेही किस रूप में सुनिश्चित की जाए।

संपूर्ण चर्चा के उपरांत कहा जा सकता है कि जवाबदेही की सार्थकता इसमें निहित है कि उसके साथ अधिकार अथवा स्वायत्तता भी संबद्ध हो। शिक्षक अपना वृत्तिक कार्य करने हेतु शैक्षिक रूप से स्वतंत्र होना चाहिए। जिसका अर्थ यह है कि शिक्षण-सामग्री तथा शिक्षा-प्रणालियों का चयन करने और अपनाने में एवं शिक्षार्थी की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए उचित समझी गई मूल्यांकन तकनीकों का चयन करने में उसे 'बोलने' का अधिकार होना चाहिए। स्वायत्तता एवं जवाबदेही परस्पर एक-दूसरे के पूरक हैं। ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 के अनुसार 'सरकार और समाज को ऐसी परिस्थितियाँ बनानी चाहिए जिनसे अध्यापकों को निर्माण और सृजन की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिले। अध्यापकों को इस बात की आजादी होनी चाहिए कि वे नये प्रयोग कर सकें और संप्रेषण की नयी उपयुक्त विधियाँ और अपने समुदाय की समस्याओं और क्षमताओं के अनुरूप नये उपाय निकाल सकें।'* शिक्षकों को यह स्वायत्तता होनी चाहिए कि वे अपने निर्धारित कार्यों को पूर्ण कर सकें। उद्देश्य प्राप्ति के लिए वे अपनी योजना बना सकें। उन परिस्थितियों को सामान्य बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए जिनमें शिक्षक-वर्ग कार्य करता है। उन बाह्य एवं आंतरिक समस्त कारकों को नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिए जो शिक्षक की कार्य-प्रणाली एवं शिक्षा-तंत्र को प्रभावित करते हैं। तभी हमें शिक्षक की जवाबदेही को निश्चित करने का अधिकार है।

शिक्षक की जवाबदेही के संदर्भ में यह ध्यातव्य है कि जवाबदेही साध्य रूप में न होकर साधन रूप में प्रयुक्त हो। इसे शिक्षा में गुणवत्ता लाने के एक साधन के रूप में देखा जाए न कि केवल साध्य रूप में। जवाबदेही के लिए सदस्यों

की पहचान करना एवं उनकी कमजोरियों को दूर करने के लिए प्राप्त आँकड़ों का पुरस्कार/दंड देने के लिए प्रयुक्त नहीं करना चाहिए।

'जवाबदेही' शब्द प्रयासपूर्वक कार्य करवाने के अर्थ को संप्रेषित करता है। इसमें भावना, निष्ठा जैसे गुणों का अभाव-सा प्रतीत होता है। अत: यह सुझाव है कि इस शब्द के स्थान पर 'प्रतिबद्धता' शब्द का प्रयोग किया जाए। प्रतिबद्धता शिक्षक के मन में यह भावना उत्पन्न करने में सहायक होगी कि वह अपने कार्य को सफलतापूर्वक, पूर्ण ईमानदारी एवं निष्ठा के साथ करे।

अंतत: कहा जा सकता है कि शिक्षा यदि एक सामाजिक ज़िम्मेदारी है तो यह सत्य है कि शिक्षक ही इस ज़िम्मेदारी का निर्वाहक है, प्रमुख है। शिक्षा का स्तर बहुत कुछ उसके निर्वाहक के स्वरूप पर निर्भर करता है। शिक्षा जैसे विषय के लिए जवाबदेह होना एक अत्यंत महत्वपूर्ण व आवश्यक प्रक्रिया है। परंतु यह भी सत्य है कि यह ज़िम्मेदारी केवल शिक्षक की ही नहीं है। यह ठीक है कि वह प्रमुख निर्वाहक है परंतु यह भी उतना ही सत्य है कि केवल वही निर्वाहक भी नहीं है। वस्तुत: सभी निर्वाहक अपने आप में प्रमुख हैं। इन परिस्थितियों में जवाबदेही जैसी महत्वपूर्ण एवं गंभीर समस्या को केवल शिक्षक तक ही सीमित नहीं किया जा सकता। इसे एक पूरी ईमानदारी, गांभीर्य एवं निष्ठा के साथ देखना होगा और उसके लिए एक समुचित वातावरण का निर्माण करते हुए पूर्व-परीक्षण आदि के माध्यम से जाँचना होगा। ठोस उपाय करने होंगे। समाज की विभिन्नता के अनुरूप विभिन्न प्रकार के परीक्षण-पत्रों का निर्माण करना होगा। साथ ही यह ध्यान देना होगा कि, जैसा कि प्राय: सभी शिक्षाविद् स्वीकार करते हैं - अंक व्यक्ति की मेधा अथवा व्यवहार के प्रमाण नहीं हैं। अत: जवाबदेही को अंकों तक सीमित कर देना, उसे अंकों से तोलना, इसे निश्चित तौर पर एक शैक्षणिक प्रक्रिया नहीं माना जा सकता अत: जवाबदेही जैसे महत्वपूर्ण, गंभीर, गहन प्रश्न के लिए महत्वपूर्ण, गंभीर, गहन उत्तर को ही खोजना होगा। संभवत: जवाबदेही के माध्यम से जिस प्रश्न को उठाने का प्रयास किया गया है, वह जवाबदेही न होकर प्रतिबद्धता है। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि जवाबदेही का प्रथम सोपान प्रतिबद्धता है।

## संदर्भ


प्राथमिक एवं सेकेंडरी शिक्षा निदेशालय (जुलाई-सितंबर 1986). *नया शिक्षक.* राजस्थान.

भारत सरकार. 1983-85. *राष्ट्रीय शिक्षक आयोग*-1.

_____ 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति.* मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, नयी दिल्ली.

_____ 1992. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986– कार्य योजना.* मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, नयी दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 1988. *अंत: सेवा अध्यापक संवेष्ठन.* खंड 1, नयी दिल्ली.